द्वितीय अध्याय

''डॉ. शंकर शेष के नाटकों का सामान्य परिचय''

डॉ. शंकर शेष के नाटकों का सामान्य परिचय

केवल अड़तालीस वर्ष की अल्पायु में डॉ. शंकर शेष जैसे महान नाटककार की मृत्यु हो गयी। उन्होंने सन 1955 से 1981 तक पच्चीस वर्षों के बीच नाट्य लेखन किया। उनमें (1958 से 1968) दस वर्षों तक वे नाट्य लेखन से दूर रहे। निष्कर्षत: सिर्फ़ पंद्रह वर्षों के अल्प समय में उन्होंने बाईस नाटकोंका सृजन किया। सिर्फ़ एक छोडकर सभी नाटकों का सफल मंचन भी हो गया है। अत: विभिन्न काल की प्राप्त कृतियों का सामान्य परिचय प्रस्तुत किए जा रहा है।

2.1 'मूर्तिकार'-

सन 1955 में डॉ. शेष जी ने अपना पहला नाटक 'मूर्तिकार' लिखा। केवल बाइस साल की छोटी उम्र में लिखे इस नाटक को जब मंचित किया गया तब नागपुर के नाटक प्रतियोगिता के साथ-साथ कश्मीर मे हुई नाटक प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

'मूतिकार' के रुप में कलाकारों की दयनीय हालत का चित्र नाटककारने हमारे समक्ष रखा है। मिट्टी से मूर्ति बनानेवाले'शेखर'जैसा कलाकार दो वक्त का भोजन भी नहीं जुटा पाता। कैनवास और रंग खरीदने के लिए भी उसके पास पैसे नहीं होते। दारिद्रय के कारण कला कुण्ठीत होने लगती है। गरीबी और बेइज्जती से यह कलाकार पूरा घायल होता है। इस नाटक के माध्यम से गरीब कलाकार को सतानेवाली सभी समस्याओं को प्रस्तुत है। यह नाटक सफल मंचन के कारण बहुचर्चित रहा।

2.2 'नयी सभ्यता के नये नमूने'-

पौराणिक पात्रों को लेकर लिखा 'नयी सभ्यता के नये नमूने' यह उनका पहला मिथकीय नाटक है। इसमे डॉ. शेष ने समकालीन समाज व्यवस्था एंव मनुष्य के नैतिक पतन की समस्या को स्वर दिया है। समाज के ब्लंक मार्केटियों,• सफेदपोशों की खाल उधेड़ दी हैं। चरित्र्यहीनता की समस्या भी प्रस्तुत की है। नाटक का नायक'कृष्ण'पढ़ालिखा है। उसके पिता को झूठे इल्जाम लगाकर नौकरी से हटाया गया है। माँ ने बहूत कष्ट उठाकर उसे बी.ए. तक पढ़ने के बावजूद उसे नौकरी नहीं मिलती। गरीबी से लडते लडते उसकी माँ दम तोड देती है। छोटी बहन शोभा को तपेदिक हो जाता है। मदत के लिये नायक

लोंगो के सामने गिडगिडाया। अंत में अपने दोस्त उधो के साथ झूट और बेइमानी से मूर्ख तथा बेइमानों को लूटता रहा। अत्यंत सभ्य तरीके से लूटने को आज की नई सभ्यता कहते है। यह कृति मिथक के द्वारा समकालीन समाज व्यवस्था एवं चरित्र्य पतन की समस्या का उदघाटन करनेवाली रचना है।

2.3 'रत्नगर्भा'-

डॉ. शेष जी ने रत्नगर्भा नाटक मे केवल शारीरिक सौंदर्यतक ही सिमित रहनीवाली सौंदर्यनुभूति की समस्या को प्रस्तुत किया है। इस नाटक में डॉ. सुनील को उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने के उसकी पत्नी अपने जेवर बेचकर पैसों का प्रबंध करती है। उसके विदेश जाने के बाद एक दिन वह स्टोव फटने की दुर्घटना से बदसूरत हो जाती है। विदेश से लौटनेपर सुनील का मन पत्नी इला से उचट जाता है। वह जुआरी और वेश्यागामी बन जाता है। दिन ब दिन वह कंगाल हो जाता है। पैसे के लिए इला को जहर देता है। उसकी साली माया इस पतन से बचती है। अंत में 'इला' के प्रेम और निष्ठा से 'सुनील' में परिवर्तन आ जाता है। अपने आपको बड़े और प्रतिष्ठित माननेवाले लोगों की पोल इस नाटक मे खोल दी गयी है। " रत्नगर्भा नारी की ओर देखने की मनुष्य की हेय दृष्टिपर करारा व्यंग है।" [1]

2.4 बेटोंवाला बाप -

डॉ. शेष द्वारा 1958 में लिखा गया 'बेटोंवाला बाप' नागपूर के धनवटे नाट्यगृह में प्रथम मंचन हुआ। लेकिन दुर्भाग्य से यह नाटक पुस्तक रुप में पाण्डुलिपि में उपलब्ध नहीं है।

2.5 'तिल का ताड'-

'तिल का ताड' यह हास्य-व्यंग्यात्मक शैली में लिखा गया डॉ. शेष का पहला नाटक है। जीवन की विसंगतियों को नाटक का कथ्य बनाया है। इस नाटक का नायक प्राणनाथ किराये के मकान में रहता है। रंजना नामक युवती से वह बेहद प्रेम करता है। एक दिन प्राणनाथ 'मंजू' नामक एक युवा लडकी को गुंडो से बचाकर घर लाता है। किराये का घर पाने के लिए वह मंजू को बीवी बनाने का नाटक करता है। अंत मे वह नाटक न रहकर तिल का ताड बन जाता है, उसे सचमुच 'रंजना' के बदले 'मंजू' से ही ब्याह करना पडता है। इस नाटक में नाटककार ने हमारे बुजुर्गो की संकीर्ण मनोवृत्ति की समस्या के साथ साथ मकान की समस्या, आदमी की बुझदिली की समस्या आदि समस्याओं को भी उठाया है।

2.6 'बिन बाती के दीप' - (1968)

डॉ. शेष जी ने इस नाट्यकृति के माध्यम से स्त्री-पुरुष संबंधों की व्याख्या नये परिपार्श्व में करने का सफल प्रयास किया है। इस नाटक का नायक 'शिवराज' स्वार्थवश 'विशाखा' जैसी अंधी परंतु प्रतिभाशाली युवती से विवाह करता है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिध्दि पाने की महत्वाकांक्षा रखकर विशाखा के लिखे उपन्यास अपने नाम से छपवाता है। विशाखा को इन सभी बातो का पता चलने इस कृत्य को विश्वासघात नहीं मानती। उसकी धारणा है की उसकी सारी रचनाएँ शिवराज के सहारे का प्रसाद है। डॉ. शेष जी ने अतिरिक्त महत्वाकांक्षा से निर्माण चारित्रिक अध:पतन और बेबस स्थिति में प्राप्त सहारे के प्रति कृतज्ञता के भाव में होनेवाले वैचारिक संघर्ष को विषय वस्तु बनाया है। साथ ही साथ नैतिक, अनैतिक की कल्पना के बारे में व्यक्तिपरत्वे बदलने वाले अलग अलग दृष्टिकोनों को प्रकट किया है।

2.7 बाढ़ का पानी -

जातिय समस्या इस नाटक में प्रमुख समस्या के रुप में उभरती है। इस नाटक का प्रमुख पात्र गाँव के चमार का बेटा 'नवल' है। वह पढ़ालिखा होने के कारण गाँव मे सुधार करना चाहता है। उसके द्वारा मंदिर प्रवेश की माँग पर गाँववालो द्वारा उसे पीटा जाता है। एक दिन बाढ़ का पानी गाँव में फैलता है। उंची जगह पर रहनेवाले नवल और उसके साथी सभी गाँववालों को अपने घरोंमे पनाह देते है। लोगों की जान भी बचाते है। दूसरी तरफ पंडित के बेटे बेसहारा लोगोंको मौके का फायदा उठा कर लूटते है। यह वास्तव को स्वीकारते हुए गाँववालों का मतपरिवर्तन होता है। जातिभेद खत्म करने के लिए गाँववाले कदम उठाते है। इस प्रकार इस नाटक के माध्यम से शेष जी ने दिखाया है की संकट मनुष्य मे मानवता निर्माण करता है। एकता रखता है।

2.8 'बंधन अपने अपने' (1969) -

यह नाटक एक और प्रतिष्ठित लिपिशास्त्री डॉ. जयंत के जीवन की शोकान्तिका है। वही दूसरी ओर आज की शिक्षा व्यवस्था के सत्य स्वरुप का विवेचन करनेवाली कृति है। डॉ. जयंत विख्यात लिपिशास्त्री है। दिनरात कामे से व्यस्त रहने के कारण शादी ब्याह के झमेले में पडना नहीं चाहता। चेतना नाम की एक छात्रा जयंत के निर्देशन में पी.एच.डी. कर रही है। उसकी पहचान जयंत के छोटे भाई प्रा.

अनदि से होती है। धिरे-धिरे दोनों के बीच प्यार बढता है। कई दिनों बाद प्रा. तर्कतीर्थ के समझानेपर जयंत शादी के लिए राजी हो जाता है। चेतना की स्वाभाविक हरकतों का गलत अर्थ लगाकर वह उसे शादी के लिए पत्र लिखता है लेकिन अनादि और चेतना को प्यार करते देखकर उसकी आँखे खुल जाती हैं। वह निराश होकर हमेशा के लिए वॉशिंग्टन जाने का तय करता है। इस नाटक के माध्यम से आज की शिक्षा व्यवस्था में होनेवाली असंगतियाँ, गुरु शिष्यों के प्रेमसंबंध, प्राध्यापकों की उच्छखलता दिखाने के साथ गुरु शिष्यों की प्राचीन पवित्र संबंधों और परंपराओं का विलय, महत्वाकांक्षी विद्वानों की व्यवहारीक धरातल पर दिखाई देने वाली कायरता और बुझदिली को भी दर्शाया है।

2.9 'खजुराहो का शिल्पी'-

इस नाटक के माध्यम से नाटककर ने वासना और मोक्ष के निरंतर चलनेवाले संघर्ष को चित्रित किया है। मानवी जीवन की विडंबना यह है कि जाने कितना भी संयम बरते 'मोह का क्षण' हमे अपने वश में कर लेता है। इस स्वाभाविक प्रवृति पर विजय पाने की मनुष्य की कोशिश यहाँ दृष्टिगोचर होती है। खजुराहो मंदिर निर्माण के समय में घटीत घटनाओं को इस नाटक की कथावस्तु बनाया गया है। राजा यशोवर्मन मोह के क्षण पर विजय पाने की प्रेरणा देनेवाले मंदिर का निर्माण करने का निश्चय करता है। खोज उपरान्त उसे ऐसा शिल्पी मिलता है जो शिल्प कला के माध्यम से 'मोह के क्षण' पर विजय पाने की कोशिश मे कार्यरत था। राजा उससे प्रभावित होकर मंदिर निर्माण की जिम्मेदारी उसपर सौंपता है। शिल्पी की प्रतिदर्श (मॉडल) के रुप मे अपनी पलित कन्या अलका को उसे सौंप देता है। शिल्पी भी योगी बनकर (संयम और एकाग्रता से) शृगांर का तटस्थता से चित्रण करता है। लेकिन अलका उसपर रीझ कर प्रेम प्रार्थना भी करती है। उसे अस्वीकार करता हुआ शिल्पी 'मोक्ष' की तरफ अग्रेसर रहता है। " डॉ. शंकर शेष की यह कृति उनके लम्बे चिंतन और मनन की उपज है।" [2] यह नाटक कला अनुभूती के साथ साथ आदर्श की ओर ले जाता है जहाँ आदमी साधक के साथ एक अध्यात्मिक योगी बन जाता है। इस नाटक के माध्यम से वासना और इंद्रिय भोग के पीछे दौडने वाले लोगों के सामने आदर्श रखने की सफल कोशिश की है।

2.10 फंदी -

फंदी यह डॉ. शेष जी की यथार्थवादी नाट्यकृति है। फंदी वल्द भगतराम पिछले पाँच सालों से ड्राइव्हर बनकर ट्रक चलाने का काम इमानदारी से कर रहा था। एक दिन अवैध काम करने से इन्कार कर देने पर उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है। उसी वक्त पिता कैन्सर की बीमारी के इलाज के लिए फंदी अपनी औरत के गहने बेच डालता है। पांच सौ रुपयों का कर्जा सिर पर चढ़ा लेता है। इलाज के लिए पिता को वह मुंबई भी ले जाता है। दिन ब दिन उसके पिता की हालत खराब हो जाती है। घावों के दर्द बढने के कारण केवल बेहोशी का इंजक्शन लगाने पर ही उन्हें नींद आती है। पिताजी 'इंजक्शन नही है तो मौत दे दो' इस प्रकार की मांग दोहराते रहते है। फंदी इंजक्शन कंगाल होने के कारण दे नहीं सकता। अनजाने में एक दिन भावनावश होकर वह - पिता को गला घोटकर हत्या कर देता है। इस कथा को नाटककार ने फ्लैश बॅक से साकार किया है। इस नाटक में जेल के भ्रष्ट प्रशासन की समस्या, वकीलों का कृष्णकृत्य, डॉक्टरों की निर्दयता की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या दृष्टिगोचर होती है। पत्थर दिल कानून और उसकी राह पकडनेवाली भ्रष्ट शासन व्यवस्था और समाज व्यवस्था सभी के सामने नाटककार ने सवाल खड़ा कर दिया है। विशिष्ट अवस्था में मानवियता का विचार करके रोगी को मृत्यु देना क्या न्यायोचित समजना चाहिए ?

2.11 'कालजयी' -

राजनीतिक जीवन में सत्ताधिश सदा सत्ता से जुडे रहने की कामना में रत रहते है। किंतु जादातर सत्ता यह संघर्ष पर टिकी रहती है। अस्थिरता के कारण वह परिवर्तन से जुडी रहती है। इसे 'कालजयी' नाटक के माध्यम से नाटककार ने प्रस्तुत किया है। इस नाटक में अन्याय, अत्याचार और दमन के हथियार की धाक जमाकर'कालजयी'नाम का राजा अपना कारोबार चलाता रहता है। अपने चिर तारुण्य की साधना में अपने कर्तव्य और प्रजा की चिंता को भूल बैठा है। प्रजा राजतंत्र खत्म कर प्रजातंत्र की माँग करती हैं। इस विद्रोह का नेतृत्व करते हैं न्यायकेतु और विजयकेतु।[८] न्यायकेतु'कालजयी को राजपद से हटाने का प्रयत्न करते हुए पकड़ा जाता है। प्रजा का विराध बढ़ता ही जाता है। एक दिन कालजयी पुरबी जैसी स्त्री के हाथों से मारा जाता है। यह नाटक आज की सत्तापिपासु प्रवृत्तिपर तीखा व्यंग कसता है। साथ ही साथ इस नाटक में जनता द्वारा परिवर्तन दिखाकर जनशक्ति की महत्ता को सिद्ध

किया है। आज के सत्ताधीश भी खुर्सी छोडने के लिए तबतक तैयार नहीं होते जबतक उसे जबरदस्ती हटाया न जाए इस सत्य से हमे अवगत कराना नाटक का उद्देश्य रहा है।

2.12 'अरे ! मायावी सरोवर'-

लोकधर्मी परंपरा का निर्वाह करनेवाला यह नाटक नौटंकी शैली में लिखा गया है। इसका विषय साधारण जन के अनुकूल काल्पनिक पौराणिक कथापर आधारित रहा है। जगह जगह लोकगितों की विभिन्न पध्दतियों का निर्वाह भी हुआ है। चेतनानगर के महाराजा'इल्वलू'गृहस्था के झंझटों से मन:शांति पाने हेतू महानदी के तट पर होनेवाली शबरी नारायण तिर्थ यात्रा पर पत्नी सुजाता के साथ जाते वक्त रास्तों में एक बड़ा अजीब जंगल आ जाता है। वहाँ सभी जीव जंतू अप्राकृतिक बर्ताव करते है। वहाँ के ऐन्द्राजालिक सरोवर में पत्नी के विरोध के बावजूद भी इल्वलू नहाने के लिए कुदता है। सरोवर की महिमा से वह स्त्री रुप में परावर्तित हो जाता है। इस गंभीर समस्या के कारण रानी को घर भेजकर वन में अकेला रहता है। एक ऋषि से राजा को पुत्र प्रप्ति होती है। इधर रानी से हुआ पुत्र अंशुमाली दिग्वजय पर निकलता है। ऋषिपुत्र अंशुमाली के अश्व को पकड़ लाता है। पहचान के उपरान्त इल्वलू और रानी सुजाता का पुन:मीलन होता है। राजकुमार और ऋषिपुत्र में से राजगद्दी पर किसका अधिकार है यह प्रश्न जब विवाद का कारण होता है। फैसला न होता देखकर इंद्र स्वर्ग से धरती पर आकर इल्वलू को पूर्वरुप प्रदान करते है। इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने अंधश्रध्दा से भरी कल्पना, शिक्षाव्यवस्था और अखबार क्षेत्र में हो रहा पतन इसपर सांकेतिक रुपकों के माध्यमसे व्यंगपूर्ण शब्दों के सहारे प्रहार किया है। ''यह नाटक केवल मनोरंजन के लिए नहीं है, प्रबोधन उसका प्रमुख उद्देश्य है '' [3]

2.13 'रक्तबीज'-

रक्तबीज यह डॉ. शेष जी का बहुचर्चित नाटक राह। इस नाटक में उन्होंने महानगरीय लोगों की मनोवृत्ति का चित्रण किया है। आज के सामाजिक संदर्भों को मानवीय स्थिति को, आंतरिक यंत्रणा को पकडकर उसे चित्रित किया है। इस नाटक में हत्या और आत्महत्या के बारे में विचार विमर्श करने के साथ पात्रों के आंतरिक संघर्ष पर बहुत जोर दिया है। नाटक के पूर्वार्द्ध में मि. शर्मा अपनी मध्यमवर्गीय जीवन से असंतुष्ट है। कंपनी के मॅनेजिंग डायरेक्टर भार्गव की कामपिपासू वृत्ति का वह फायदा

उठाता है। अपनी पत्नी का इस्तेमाल 'उसके मर्जी के बिना' करता हुआ पैसा, प्रतिष्ठा और पदोन्नती की महत्वकांक्षा पूरी करता है। भार्गव से पत्नी सुजाता गर्भवती होती है। तनाव सह न पाने के कारण आत्महत्या करती है। नाटककार सवाल खड़ा कर देता है, सुजाता की मौत आत्महत्या से हुई थी या हत्या से ? नाटक के उत्तरार्ध्द में दूसरी कथा सामने आती है। शंतनू एक मेधावी वैज्ञानिक होने के बावजूद कनिष्ठ वैज्ञानिक के रुप में कार्यरत है। पदोन्नति पाने के लिए अपने रिचर्स पेपर अधिकारी वैज्ञानिक डॉ. गोयल के नाम पर छपवाता है। उसका इस्तेमाल करके बड़ा बनना चाहता है। एक दिन गोयल भी ग्यारह साल की अनवरत मेहनत से किया संशोधन धोका देकर अपने नामसे छपवाकर बड़ा बन जाता है। और 'अब जिंदगी में करने लायक कुछ भी नही' ऐसा खत में लिखकर आत्महत्या कर देता है। डॉ. गोयल अपने मौत का भी इस्तेमाल करता हुआ बड़ा बन जाता है। रक्तबीज यह डॉ. शेष जी का मिथक नाटक है। इस नाटक में उन्होंने रक्तबीज राक्षस की कथा और आज के जीवन संदर्भों को समकक्ष रखते हुए दोनों की सहज बढ़ने की प्रक्रिया को उजागर किया है। नाटक का दर्शन पक्ष काफ़ी प्रबल है।

2.14 'राक्षस'-

डॅ. शेष जी ने इस नाटक में पौराणिक बकासूर की कथा का उपयोग किया है। ''लोकनाट्य की शैली में लिखा 'राक्षस' नाटक हास्य व्यंगसे घिरे एक गंभीर जीवन दर्शन उपस्थित करता है।'' [4] विज्ञान का विनाशक स्वरुप एटमबम, हायड्रोजन बम और परमाणू बम को राक्षस के रुप में प्रस्तुत किया है। इस नाटक मे विश्वासनगर नाम का गाँव एक राक्षस से परेशान है। राक्षस का आतंक सारे गाँवभर फैला है। रणछोडदास जो गाँव का नेता है। राक्षस का प्रतिकार करने के बजाय उससे समझौता करता है। राक्षस को विनंती करता है की रोज एक आदमी को खा ले। जब लडकों की बारी आती है तब एक महिला अध्यापिका इसका विरोध करती है। वह विद्यार्थी वर्ग में साहस की प्रेरणा का निर्माण करती है। उनका संघटन करके अन्याय का प्रतिकार करने की भावना जगाती है। इस रंजनप्रधान लोकनाट्य में संगीत की भरमार रही हैं। लेकिन चिंतन का विचार भी कुछ कम नहीं है। नाटक में उत्थान, विकास और शांति की राह दिखाने का एक सफल प्रयास किया है।

2.15 'चेहरे'-

आज का हमारा सारा जीवन एक नाटक बन गया है। हर मनुष्य सुबह से राततक केवल मुखौटे धारण करता है। अपने असली चेहरे को छिपाने की कोशिश करता रहता है। इसे डॉ. शेष जी ने 'चेहरे' नाटक के माध्यम से प्रतिपादित करने की सफल कोशिश की है। इस नाटक का कथानक समाज सेवी भरोसेलालजी की मृत्यु और उनके शवसंस्कार को लेकर बनाया है। भरोसेजी का अंतिम संस्कार करने के लिए जाते वक्त लोगों को एक पुराने खण्डहर का आश्रय लेना पडता है। वर्षा के कारण वहाँ दूसरे कई लोगोंका वहाँ रुकना पडता है। संवादों के बीच ही सभी लोगों की असली प्रवृत्तियाँ सामने आने लगती है। उसी की जरिए मनुष्य की स्वार्थिवृत्ति, अलगाव की भावना, संवेदनहीनता, क्रुरता, अनाचार सभी प्रवृत्तियों की पोल नाटककार ने खोल दी है। सडीगली राजनीति को प्रकाश में लाना उनका प्रमुख उद्देश रहा है।

2.16 'कोमल गांधार'-

प्राचीन काल से नारी सदैव उपेक्षा का पात्र रह चुकी। उसे केवल प्रजोत्पादक यंत्र के रुप में देखा गया। उसके विचार, मन, भावनाओं को सदैव कुचाल दिया गया। इसे महाभारत के गांधारी के पात्र के माध्यम से डॉ. शेष जी ने प्रस्तुत किया है। विवाह जैसे भावनात्मक सवालों का राजनीतिक हल ढुंढकर भिष्म ने गांधार देश की राजपुत्री गांधारी के साथ अंधे धृतराष्ट्र का विवाह कर दिया। उसे जब पति के अंधेपन की खबर मिलती है तब उसके सारे स्वप्न मुरझा जाते है। निराश बनकर अपनी आँखोपर पट्टी बांधकर खुद को भी अंधी बना देती है। उसकी उदासीनता देखकर धृतराष्ट्र दासी के साथ शारीरिक संबंध रखते है। बाद मे राज्य को उत्तराधिकारी पाने हेतू गांधारी अनिच्छासे धृतराष्ट्र पर समर्पित हो जाती है। उसे पुत्र की प्राप्ती हो जाती है। लेकिन वहीं पुत्र बड़े होने पर कुरुक्षेत्र पर हुअे युध्द में काम आते है। बच्चों का भी सहारा वह खो बैठती है अंत मे पति-पत्नी हिमालय कैलास की यात्रा पर निकलते है और जंगल की दावाग्नि में उनकी मृत्यु हो जाती है। हर वक्त गांधारी का भावविश्व उजड जाता है। यह नाटक विचार प्रधान तथा चरित्रप्रधान नाटक है। नारी केवल शारीरिक वस्तु मात्र नहीं है। उसमें भी संवेदनाक्षमता होती है। नारी पर सदैव अन्याय करनेवाली परंपराओं पर करारा प्रहार करना एवं ऐसी व्यवस्था को नष्ट करने की आवश्यकता प्रतिपादन करना इस कृति का उद्देश रहा है।

2.17 'आधी रात के बाद'-

प्रतिष्ठा का नकाब ओढकर समाज का निर्माण शोषण करनेवाले भ्रष्टाचारी लोगों को बेनकाब करने का प्रयत्न डॉ. शेष जी ने इस नाटक के माध्यम से किया है। इस नाटक में दिखाया गया है कि महानगरों में जमीन की कमी के कारण ज़मीन पाने के लिए ठेकेदार गरिबों के झोंपडे, पुराने घरों को जला देते है। कानून से बचने के लिए वे जज, पुलिस, पत्रकार, सरकारी अफसरोंको खरिद लेते है। गरीब आदमी प्रतिकार भी नहीं कर सकता। ऐसा ही एक गरीब आदमी चोर बनकर चोरी करने आधी रात के बाद एक जज के घरमें जाता है। जज ने भ्रष्ट ठेकेदार को बचाने के लिए उसके जाली कागजात अपने घर में छिपाकर रखे थें। चोर उन्हीं को खोजकर जज को दिखाता हुआ बताता है कि जज भी एक चोर है। कागजाद लेकर वह भाग जाता है अंत में मुकदमा चलकर जज को भी सजा होती है। इस प्रकार पंचतारांकित होटल में शानशौकत से रहनेवाले तथा समाज में लब्धप्रतिष्ठित होनेवाले लोग असली अपराधी, गुनहगार किस प्रकार हैं। इन सभी का पर्दाफ़ाश इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने किया है।

2.18 'त्रिकोण का चौथा कोण'-

(अनुपलब्ध)

2.19 'एक और द्रोणाचार्य'-

वर्तमान शिक्षा पध्दति अत्यंत दूषित हो चुकी है। आज का शिक्षा संसार समस्याओं के कारण निरंतर पतन के गर्त में गिरता चला जा रहा है। आज शिक्षा प्रणाली के समस्त नैतिक मूल्य बदल गये है। समस्त शिक्षा-संसार 'इस्तेमाल' का व्यापार बनकर रह गया है। ''महाभारत के सन्दर्भों को आधुनिक जीवन से जोडने का अनुठा प्रयास नाटककार ने 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक के माध्यम से किया है। '' [5] इसमे द्रोणाचार्य जैसे पात्र को आधुनिक शिक्षा-संसार के संदर्भ में पुर्नमूल्यांकित करने का प्रयास किया गया है।

इस नाटक के सर्वप्रथम दृश्य के आरंभ में प्रो. अरविंद की पत्नी लीला पति से अंधेरे में दम घुटने और महंगाई के बारे में बताती हैं। उन पर की मेहरबानि याँ करनेवाले सिन्हा के 'बॉस के बेटे को' शिफारिश के बाद भी फेल कर देने पर दुःख प्रकट करती है। उसी बीच अरविंद का मित्र यदू आकर

बतलाता है की अरविंद ने शहर का सबसे बडा 'गुंडा' 'प्रेसिडेन्ट का पुत्र राजकुमार' को सामने छुरा रखकर नकल करते वक्त रंगे हाथों पकडा है। लीला और यदू अरविंद के आदर्शवादी रवैये पर बहूत बूरा भला कहतें हैं। लीला घर की सभी समस्याओं का वास्ता देकर प्रेसिडेन्ट से माफी माँगने की सलाह देती है। यदू उसे विमलेन्दू का किस्सा सुनाकर आगाह करता है। विमलेन्दू को भी इसी प्रकार का बर्ताव करने के कारण अपनी जान गंवानी पडी। यदू के जाने के बाद प्रिन्सिपल आकर बिगडी हुई बात को संभालने के लिए विनंती करता हुआ गिडगिडाता है। प्रेसिडेन्ट की उपद्रवक्षमता की जानकारी भी देता है। अरविंद सिगरेट लाने बाहर जाता है तब वह लीला से शिकायत करता हुआ चला जाता है।

अरविंद के बाहर से आने के बाद उसी वक्त कॉलेज छात्र चंदू आकर समझाता है कि उसे भी नकल करने के जूर्म में पकडा गया है। उसके परीक्षा में उसके पास ही राजकुमार छूरा रखकर नकल कर रहा था। वह उडकर अपने पास आये हुऐ उसी में से एक कागज को प्रो. मिश्रा को दे देने की बात सोच ही रहा था कि वे घसीटकर प्रिन्सिपल के कमरे में ले गये। फिर उसके विरुध्द रिपोर्ट बनाकर युनिवर्सिटी के भेज दी गई। उसके पिताजी प्रेसिडेन्ट के राजनीतिक विरोधी है। अगामी चुनाव को नजर में रखकर कड़ी कारवाई की गई। लेकिन राजकुमार की रिपोर्ट दबाई जा रही है। इसलिए युवा आंदोलन करने के बारे में वह कहता है। चंदू के वहाँ से चले जाने के बाद प्रेसिडेन्ट आकर राजकुमार द्वारा नकल करने के लिए अध्यापकों को ही दोषी ठहराता है। रिपोर्ट वापस लेने के लिए अरविंद पर दबाव डालता है। बाद में कॉलेज बंद करवाने की धमकी भी देता है। जब सभी हथकंड़े नाकामयाब हो जाते है तब वह अरविंद को प्रिन्सिपल बनवाने का प्रलोभन दिखलाता हुआ चला जाता है। चंदू और लीला फिर से अरविंद पर रिपोर्ट वापस लेने के लिए दबाव डालते है। अरविंद के सामने सवाल खड़ा हो जाता है चंदू का विरोध करेंगे तो सामाजिक हत्या होगी और राजकुमार के विरोध से स्वय: अरविंद की हत्या कर दी जाएगी। हत्या से वह बच नहीं सकता।

नाटक के दुसरे दृश्य में अरविंद के सामने विमलेन्दू के प्रेत की आकृति उभरती है। वह बात करती है। अरविंद उसे मृत्यू के समय की उसकी मनस्थिति के बारे में पुछता है। तब विमलेन्दू का प्रेतआत्मा, आत्मत्याग, आदर्श और बलिदान जैसे शब्दों को बकवास कहता है। अंत्यसंस्कार के वक्त पर किये जानेवाले झुटे भाषण पर निषेध व्यक्त करता है। जोश मे आकर नकल पकडने के लिए अपने को दोषी समजता है। मौत के बाद परिवार की दूर्दशा हुई है उससे अवगत कर के समयके साथ समझौता करने की

सलाह देता है। उसी ने ही द्रोणाचार्य पर खेला नाटक का स्मरण दिलाकर आकृति अंधेरे में लुप्त हो जाती है।

नाटक के तीसरे दृश्य में अश्वत्थामा माता कृपी के पास दूध के लिए हट करता हुआ नजर आता है। कृपी द्वारा दिया आटे का घोल पीकर चला जाता है। द्रोणाचार्य उसी वक्त वहाँ आते है। उनके पुछने पर वह 'दूध' के नाम पर शिशु को 'आटे का घोल' पिलाने की बात कहती है। रोटी जुटाने के लिए आनेवाली परेशानियों को भी बताती है। जब द्रोणाचार्य पत्नी को द्रुपद द्वारा स्वयं की लतियाये और नौकरों द्वारा धकिया कर बाहर निकाले जाने की बात बताता है। अब वह अपने इस अप्रत्याशित अपमान का बदला लेने के लिए पीढ़ी तैयार करेगा, जो केवल युध्द की भाषा बोलेगी, तब भिष्म पितामह आकर आचार्य की धनुर्विद्या की प्रशंसा करते हुए राजपुत्रों का ' आचार्यपद' ग्रहण करणे का प्रस्ताव रखते हैं। कृपी झट से स्वयंमेव आश्वस्त करती है की द्रोण उस पद को आवश्य ग्रहण करेंगे। इसके पीछे अनाज, कपडे की समस्या मिटाने की आशा ही थी। शिष्य द्वारा द्रुपद का बदला लेने की योजना भी थी। इसपर द्रोण अपनी नियती समझकर समझौता करने के लिए तैयार हो जाते है।

नाटक के चौथे दृश्य मे एक दिन गुरु द्रोणाचार्य प्रिय शिष्य अर्जून के साथ जंगल से गुजर रहे थे। तब एक भौंकने वाले कुत्ते का मुँह, अचानक बाणों की सहायता से एकलव्य ने बंद किया हुआ देखते है। एकलव्य द्रोणाचार्य को अपना गुरु बतलाता है। दस वर्ष पहले शिष्य बनने की इच्छा लेकर उनके पास गया था तब वर्ण व्यवस्था के आड़ में द्रोणाचार्य ने उसकी प्रार्थना अस्वीकार की थी। फिर उसने वन में आकर द्रोणाचार्य का एक पुतला बनाकर उसके चरणों मे बैठकर इतकी क्षमता प्राप्त की है। इसी कारण वह गुरु-दक्षिणा माँगने की बात करता है। तब द्रोण गुरुदक्षिणा के रुप मे उसके दाहिने हाथ का अंगुठा माँगते हैं। इस पक्षपात के रवैये पर एकलव्य निषेध व्यक्त करता है लेकिन अपने वचन को पुरा करने के लिए चला जाता है। उसके जाते ही अर्जुन द्रोणाचार्य की 'क्रूरता' का कारण पुछता है। तब द्रोणाचार्य 'सर्वश्रेष्ट धनुर्धर' बननेका अर्जुन को दिया हुआ आशिर्वाद सच करने के लिए, शुद्रों को बलवान बनने के बाद वर्णाश्रम धर्म खतरे में पड जाएगा उसे बचाने के लिये अंगुठा छिनकर उसकी प्रतिभा कुचलकर भावी आशंकाएँ खत्म करने की बात कहते हैं। तब अर्जुन इस गुरु दक्षिणा के कारण उत्पन्न मन की अपराध भावना से उन्हें अवगत करता है। द्रोणाचार्य अपनी माँग पर आखिर तक अड़े रहते है और एकलव्य अपना अंगुठा गुरु-दक्षिणा के तौर पर काटकर देता है।

नाटक में उत्तरार्ध्द के प्रथम दृश्य मे आधुनिक कालीन कथा है। फोन उठाकर लिला श्रीमती

शुक्ला से बातें करने लगी है। तभी अरविंद आता है। हर आदमी द्वारा अपने को 'बेइमान' और 'अवसरवादी' समझे जाने पर कुंण्ठित महसूस करता है। तभी यदू आता है तो अरविंद उसे अपनी उदासी का कारण बताता है। के कॉलेज भवन के पीछे बगीचे में गुलाब की नयी कलमों को देखने पहुँचा तो उसे झाडीके पास चीखती हुई अनुराधा पर झपटता हुआ प्रेसिडेन्ट पुत्र राजकुमार दिख गया, जो ललकार नें पर वहाँसे भाग गया। अरविंद स्वयं को कठपुतली प्रिन्सिपल मानते है। लीला और यदू, अरविंद को अनुराधा की 'रिपोर्ट' दबा देने का सुझाव देते है। लेकिन वह तो पूर्ववत सच वही बोलने पर अड़ा रहता है। लीला के स्वार्थी रवैये पर कटू आलोचना करता है।

यदू के चले जाने के बाद प्रेसिडेन्ट आकर अरविंद पर दबाव डालने की कोशिश करता है बादमे कहता है किउन्हें आज कल मंत्री मंडल में लेने की बात चल रही है। सो वे इन दिनों बेटे को सजा मिलनेपर अपनी इमेज नही बिघड़ना चाहते। जब अरविंदने पुनः सच बोलने का हठ दोहराता है। तब प्रेसिडेन्ट उसे पुलिस की हिरासत में इलवा देने की धमकी देते हुए चले जाते है। तभी अनुराधा आती है और उससे राजकुमार के विरुध्द कोई अॅक्शन की उसकी जानकारी चाहती है। उसे और उसके परिवार को राजकुमार के गुंडो द्वारा मिलने वाली धमकियों के बारेमें बतलाती है। जब अरविंद उसे अश्वस्त करने की कोशिश करता है। तब प्रेसिडेन्ट का फोन आता है। प्रेसिडेन्ट पैसों के गबन के करने के झूटे मुकदमे में उसे फसाने की धमकी देता है। तब अरविंद प्रेसिडेन्ट की बात मानने के लिए तैयार हो जाता है। अनुराधा यह सुनकर निराश होकर चली जाती है। अरविंद लीलासे बतलाता है प्रेसिडेन्ट ने शिक्षण संस्था की लाखो रुपयोंकी ग्रांट से अपने लेन-देन का धंदा चला रखा था। आज लौटाने वाला था। अब तो उसी 'अंडरस्टँडींग' को गबन में परावर्तित करता हुआ उल्टा अरविंदको ही फसांना चाहता है। तभी अनुराधा के दुर्घटना ग्रस्त होने की बुरी सुचना मिलती है।

दूसरे दृश्य में परेशान अवस्था मे अरविंद लेखन रत है तभी विमलेंदू की प्रेत आकृति उभरकर सामने आती है। और अपने पिछे पत्नी की जो दूर्दशा हो रही है। उसे बतलाकर द्रोणाचार्य पर खेले गये नाटक की याद दिलाकर उसे समझौता करने की सुलाह देता है। तीसरे दृश्य में अश्वत्थामा और कृपी और द्रोणाचार्य संबंधी कथा हैं। अश्वत्थामा द्रौपदी के चीर-हरण के प्रसंग में वहाँ अपने पिता द्रोणाचार्य की चुप्पी पर विस्मित है। अपने चुप्पी पर लज्जित है। इसके पिछे का राज वह पुछता है। कृपी इसका स्पष्टिकरण देने के बजाय उल्टा द्रोणाचार्य को धूतकारती है। इसपर द्रोण सबके पीछे कृपी को ही

गुनहगार मानते हैं। उसी ने उन्हें राजकीय अन्न की दासता में धकेला था और सुविधाभोगी बनाया। प्रतिशोध की भावना के कारण उनकी आत्मा मर गयी है।

चौथे दृश्य मे दिखाई देता है की अरविंद को प्रेसिडेन्ट की हत्या के आरोप में जेल में बंद है। वहाँ विमलेंदू की प्रेतआत्मा अरविंद के दोहरे व्यक्तित्व की कटू आलोचना करता है। : : उसने प्रेसिडेन्ट के साथ किए भ्रष्टाचार की पोल खोलता है। लेकिन अरविंद चंदू पर इतना अन्याय करने बाद भी चंदू से अदालत मे सच बोलने की आस लगाए बैठे हैं।

पांचवे दृश्य में पुनः प्रकाश होनेपर अदालत में दो कठघरे नजर आते हैं। अपराधी के कटघरे में अरविंद और गवाह के कटघरे में चंदू खड़ा नजर आता है। सरकारी वकील के प्रश्नों के उत्तर में चंदू अनुराधा का ऐसा पत्र पेश करता है किजिसमें उसकी आत्महत्या का दोषी अरविंद को बताया था। अब सरकारी वकील चंदू द्वारा उध्दृत अनुराधा के पत्र उस वाक्य को फिर से उठाता है, जिसमें कहा गया है कि अनुराधा के साथ बलात्कार-प्रयास की रिपोर्ट लिखते समय अरविंद ने कहा था कि उसे राजकुमार के कमीने पिता से बहुत से हिसाब चुकाने हैं। इससे उसके मन में प्रेसिडेन्ट के प्रति दबी चिर घृणा प्रमाणित होती है। इसके बाद सरकारी वकील के यह पुछने पर कि, क्या प्रो. अरविंद ने प्रेसिडेन्ट को पहाडी के चोटी से निचे धकेला था ? उस पर चंदू कठोर मुद्रा में बस इतना ही कहता है कि 'हो सकता है।' सरकारी वकील दुर्घटना के समय चंदू की वहाँ की उपस्थिती की छानबीन करते है।

छटे दृश्य में विमलेंदू की प्रेत आकृति से अरविंद पुछता है कि चंदू ने अदालत में सच क्यों नही बोला उसपर विमलेंदू की प्रेत आत्मा महाभारत के पंधरावे दिन का दृश्य याद कराने के लिए कहता है।

सातवे दृष्य में द्रोणाचार्य युध्द क्षेत्र मे खडे हैं उसी वक्त 'अश्वत्थामा मारा गया' की तीखी आवाज सुनाई देती है। द्रोणाचार्य सैनिकसे अपने बेटे की वध की पुष्टी करना चाहते हैं। अश्वत्थामा नामक हाथी मारा गया था कि उसका पुत्र ? उससे सही उत्तर न मिलने पर युधिष्ठर से पुछने पर वह तो उतनाही जानता अश्वत्थामा मारा गया है। वह नर था या कुंजर लेकिन तभी कृष्ण द्वारा की गयी 'शंख-ध्वनी' उसके अगले शब्द 'कुंजर' शब्द को दबा लेती है। द्रोणाचार्य आगे युध्द करने में असमर्थता प्रकट करते हैं तभी एक आवाज'धृष्टघुम्म'को अपने पिता (दृपद) के अपमान का बदला बूढे द्रोण की गर्दन काट लेने का आदेश देती है।

नाटक के अंतिम आखरी दृश्य मे विमलेंदू अरविंद से पुछता है कि अब तो उसे अपने प्रश्न

का उत्तर मिल गया होगा। उत्तर में विमलेंदू द्वारा धर्मराज से चंदू की तुलना करने पर अरविंद प्रश्न चिन्ह लगाता है। परंतु विमलेंदू के अनुसार अरविंदने अपने चरित्र से ही चंदू को झूट बोलना सिखाया। अरविंद द्वारा उसके आत्म बलिदान कि याद दिलाने पर वह रोकता हुआ अपनी जवान पत्नी की बेबस स्थितिसे अवगत कराता है। अरविंद पर वह और एक द्रोणाचार्य होने का आरोप लगाता है। और नाटक समाप्त हो जाता है।

घिनौंनी राजनीति ने और स्वार्थी महत्वकांक्षा की कृरता ने पवित्र शिक्षाक्षेत्र सडांध बना दिया है। आजका शिक्षक किस प्रकार व्यवस्था के हाथों अपने आप को बेच देता है। सुख और सुविधा के कारण अपने कर्तव्य को किस प्रकार भूल बैठे हैं। इसका चित्रण इस नाटक में नाटककार करते हुए एक कटू सत्य से हमे परिचित किया हैं।

2.20 'घरौंदा' -

'घरौंदा' नाटक के माध्यमसे डॉ. शंकर शेष जी ने महानगरीय मध्यवर्गीय जीवन में व्याप्त मकान की भीषण समस्या का प्रश्न उठाया है। किंतु इसी समस्या को केंद्र मे रखकर महंगाई, मूल्य विघटन, आर्थिक शोषण, कृरता भरी महत्वकांक्षा ऐसी अनेक समस्याओं को भी चित्रित किया है। सुदिप, छाया और मोदी नाटक के मुख्य पात्र हैं। उनके बीच चलने वाले अंतरिक संघर्ष की यह कथा है।

'घरौंदा' की कथा छाया और सुदिप के जीवन संघर्ष की कथा है। 'सुदिप' मुंबई जैसे बड़े महानगर मे रहता है। शादी की उमर होन पर भी वह शादी कर नहीं सकता क्योंकि उसके पास अपना घर नहीं है। इसलिए वह अपने मित्रों के साथ लॉज मे रहना पडता है उसी की तरह उसका साथी चोपडा की समस्या है। दुसरे साथी गुहा और अब्दुल भी शादी शुदा हैं लेकिन मकान की समस्या के कारण अपने बीवी को गाँव मे रखना पडता है। सुदिप मोदी के ऑफीस मे काम करता है। उसके दफ्तर में एक दिन छाया को टाईपिस्ट की नौकरी मिल जाती है। अपनी साली को वह नौकरी न मिलने के कारण बड़े बाबू पहले ही दिन उसपर काम का बोझ डालता है। तब सुदिप उसे मदत करता है वहीं से वे निकट संपर्क में आ जाते हैं। सहवास बढ़ने के कारण सुदिप और छाया के बीच प्रेम संबंध स्थापित हो जाते हैं। दोनों मकान के अभाव मे शादी नही कर सकते। चाल में बड़ी हुई छाया चाल से नफरत करती है। फ्लैट मे रहना चाहती है। जबतक फ्लैट नही लेते तबतक शादी न करने का फैसला दोनो करते हैं। अत: वे बचत शुरु करते हैं। एक समय

वडा और पाव तथा दूसरे वक्त सिर्फ़ राईस प्लेट खा कर ज़िंदगी गुजारने लगते हैं। बरसों बीत जाते हैं लेकिन बढनेवाली मंहगाई के कारण वे सपना सच मे बदल नही सकते। थोडी बहुत पुंजि बनाते हैं लेकिन बिल्डर पैसे खा जाता है। दूसरी बार छाया का भाई उसके बचत के पैसे लेकर अमरिका पढ़ाई के लिए जाता है। सुदिप के पैसे एक मकान मालिक अपने बेटी के दहेज के लिए हजम कर जाता है। हर बार आने वाले अवरोधों के कारण दोनों निराश हो जाते हैं ।

फर्म के मालिक मि. मोदी छाया के सामने शादी का प्रस्ताव रखता है। मोदी को दिल की बिमारी है। थोडे दिनों में वह मरने वाला है। उसके बाद उसकी सभी संपत्ति उसकी पत्नी की हो जाएगी ऐसा सोचनेवाले सुदिप के मन में एक षडयंत्र का निर्माण होता है। वह छाया पर मोदी के साथ शादी करने के लिए दबाव डालता है। आखिर में हार मान कर अपनी इच्छा के विरुध्द सिर्फ़ सुदीप की खुशी बनाये रखने के लिए छाया मोदी के प्रस्ताव को स्वीकारती हुई मोदी के साथ शादी कर लेती है। तभी प्रथम अंक समाप्त हो जाता है।

छाया के साथ शादी करने के पीछे एक राज था। मोदी की पहले पत्नी का स्वर्गवास हो चुका था। और छाया उसकी पहली पत्नी जैसी ही दिखाई देती थी। छाया के कदम घरमे पडते ही मोदी के कारोबार मे पाँच लाख रुपयों का फायदा हो जाता है। मोदी के ऑफीस चले जाने के बाद सुदीप घरमे आ जाता है। तब संस्कृति के संस्कारों के कारण छाया उसे स्पर्श भी नहीं करने देती। तभी डॉक्टर का फोन आ जाता है वह बतलाता है किशराब और शारीरिक संबंधोंसे मोदी को दूर रखकर इलाज करना चाहिए। उसे दिल के दो दौरे आ चुके है। सुदीप छाया को इसके बराबर उल्टा करने के लिए कहता है। जल्दी से जल्दी वह मोदी की मौत चाहता है। अपनी आर्थिक समस्याओंका रोना रोकर सुदीप छाया से पैसे निकालकर चला जाता है। मोदी आने के बाद छाया डॉक्टर ने बताये हुए मार्ग पर चलने के लिए उसे तैयार कर देती है। उसकी सेवा के कारण मोदी की तबीयत दिन-ब-दिन सुधरती जाती है। इधर सुदीप हरबार नयी-नयी तरकीब निकालकर कुल मिलाकर पंद्रह हजार रुपये ले जाता है। सुदीप की पलायनवादी वृत्ति की तुलना में मौत से झगडने वाले मोदी का चरित्र छाया को जादा प्रभावित कर देता है। मोदी भी उसमें छिपे कलाकार सामने लाता हुआ उसकी क्षमता का एहसास उसे कराता है।

मुफ्त में मिले पैसों के कारण सुदीप शराबी बन जाता है। दफ़्तर में झगडा करने लगता है। एक दिन शराब पी कर दफ़्तर आकर झगडा करता है। परिणाम स्वरुप मोदी उसे नौकरी से निकाल देता है।

बड़े बाबू और मिश्रा जी आकर छाया को जिम्मेदार बताते है। तब छाया उन्हें असलियत बताती है। मिश्रा जाने के बाद वह लॉज पर सुदीप से समझाने जाती है। वापस आकर मोदी से कह कर दूसरी सुदीप को नौकरी दिलवा देती है।

अंत में सुदीप को अपनी गलतियोंका एहसास हो जाता है। और वह छाया से पत्र भेजकर माफी मांगता है। अंत मे छाया और मोदी का मिलाफ हो जाता है। इस नाटक के माध्यम से मूल्यों के अवमूल्यन की समस्या तेजी से उभरती हुई दिखाई देती है। मकान तो सिर्फ़ बहाना है। सभी रिश्ते-नाते और मानवीय संबंधो को 'अर्थ' के तराजू में हम तौलते रहते हैं। घरौंदा की कथा छोटीसी है किंतु व्यापक अर्थ समेटने की शक्ति उसमें हैं। घरौंदा नाटक का मंचन बहुत ही सफल रहा। उस पर बनी फिल्म भी काफ़ी सफल रही।

2.21 'पोस्टर' -

मध्यप्रदेश के नारायणपुर जैसे पिछडे इलाकों में अनुसंधान अधिकारी के हैसियत से डॉ. शेष जी ने कार्य किया था। तब उन्होंने आदिवासीयोंपर किया जानेवाला अन्याय, अत्याचार और आर्थिक शोषण इन घटनाओंको देखा था। संवेदनशील डॉ. शेष जी बैचैन हो गये " उन्हें यही बात सालती थी कि आदिवासी आर्थिक मुद्दोंपर संघर्ष लिए तो एक हो जाते थे लेकिन यौन शोषण जैसे सवालों व्यक्तिगत मानकर संघर्ष से दूर हो जाते थे। इस कशमकश में 'पोस्टर' का निर्माण हुआ है।" [6] डॉ. शेष जी ने अन्याय और अत्याचार के खिलाफ लडने की हिम्मत पैदा करने की कोशिश इस के माध्यम से की है। यह नाटक मजदूर संघर्ष के उपर केंद्रीत है। कीर्तनकार सुत्रधार के रुप में दिखाई देता है। कीर्तन शैली का इस्तेमाल इस नाट्य लेखन में किया गया है।

नाटक का आरंभ का दृश्य एक मंदिर का है। जहाँ किर्तन सुनने के लिए बहुत सारे लोग इकट्ठा हुए हैं। नाटक का आरंभ किर्तनकार ईश्वर वंदना से करता है। उसके बाद गणेश वंदना के गीत सुनाता है। सुरदासजी का पद 'निर्धन को धन राम हमारो' सुस्वर सुनाने के बाद अपने साथी के साथ धन के बारे में अपना विचार व्यक्त करता है। जब वह ब्रम्हनिरुपण करने लगता है। तब एक श्रोता कीर्तन रोकने के लिए कहता है। कीर्तनकार कारण पुछते है तब वह बतलाता है कि मंदिर अपवित्र हो गया है। कीर्तनकार अपवित्र होने की वजह पुछते है। पहले पहल श्रोता ड़रता है लेकिन कीर्तनकार द्वारा ढ़ाढ़स

बांधने पर वह बतलाता है कि कुछ दिन पहले मंदिर के पिछवाडे में घनी झाडियाँ है वहा एक लडकी पर बलात्कार हुआ है। उस घटना का चश्मदिद गवाह वह है। लडकी उस वक्त चिल्ला रही थी। लेकिन उस ने मदत नहीं की। बलात्कारी आदमी पैसेवाला और ताकतवर है। श्रोता विरोध करता तो उसी वक्त उसे मार दिया जाता। कानून और पुलिस बलात्कारी के जेब में है। श्रोता ने शहर जाकर अख़बारवाले को बताने की कोशिश भी की थी। लेकिन खबर नहीं छपी। दारोगा के कहनेपर लडकी को थाने में रिपोर्ट लिखवाने के लिए ले जाने उसके घर गया था। उस वक्त लडकी सिर्फ़ रोने लगी। बाप ने इन्कार करते हुए उसे ही समझाकर घर भेजा। तब कीर्तनकार उस अत्याचारी का नाम पुछते है। श्रोता डरता हुआ कहता है वह नाम बताएगा तो उस का परिणाम उसेही नहीं उसके जाति के लोगों को भी भूगतने पडेंगे। उसे हिम्मत जुटाने के लिए कीर्तनकार एक कथा सुनाते हैं। वह है मजदूरों के कडे संघर्ष की।

घने जंगल में बसे हुए सौ दो सौ की बस्तीवाले एक पुराने गॉव में एक पटेल रहता था। उसके पूर्वज चालीस साल पहले उस गाँव में आये थे। उन्होंने गाँव की सभी जमीन खरीद ली है। उस वक्त तो एक दोना नमक के बदले एक दोना चिरौंजी लेकर अनपढ लोगोंको फसाते थे। पटेल ने जंगल का ठेका भी ले लिया था। वह सिर्फ़ एक रुपया मजदूरी देकर मजदूरों से सौ गुना जादा काम लेकर मुनाफा कमाता था। वह कोशिश करता है कि मजदूर आदिवासी सिर्फ़ नाचते रहे गाते रहे। मजदूरों की स्थिति करुणजनक थी। उनका जीना महंगा और मौत बहूत सस्ती थी। एक वक्त ही सुखी रोटी पानी के साथ खाकर लंगोटी पहनकर मजदूर एक एक दिन बिता रहे थे। मजदूर बगावत न करे इसलिए पटेल अफसरों और पुलिस को रिश्वत और दारु, नेता को चंदा देता था। मजदूरों में व्याप्त अंधश्रध्दाओं का फायदा उठाने के लिए हमेशा की तरह एक दिन स्वामी अखंडानंद को बुलाता है। उसके जरिए मजदूरों में यह विश्वास बनाए रखना चाहता था कि उन्हें जो जिंदगी मिली है, वह महज उनके पूर्वजन्म के कर्मों का फल है। अखंडानंद भी स्वर्ग और नरक की झूठी तसवीर दिखाता है। साथ ही स्वामिभक्ति का फल स्वर्ग और मालिक से विद्रोह का फल नरक ऐसा कहता हुआ सबको भयग्रस्त कर देता है।

एक मजदूर की पत्नी चैती मैके जाती है वहाँ रास्ते पर उसे एक पोस्टर मिल जाता है। उसके द्वारा लाया पोस्टर अनजाने में अनपढ़ मजदूर उसे दिवार पर चिपकाते है। उस पर वेतन बढाने की माँग लिखी होती है। पटेल जब आता है तब नक्सलवादियों के पोस्टर को देखकर हडबड़ा जाता है। पहले पहल वह धमकियाँ देता है। डर की वजह से मजदूर पोस्टर किसने चिपकाया यह नहीं बताते तब उसका

उल्टा अर्थ समझकर पटेल नक्सलवादियों के इर से पचीस पैसे मजदूरी बढ़ाता है। पटेल पोस्टर को इरता है यह देखकर मजदूरों की हिम्मत और बढ़ती है। कल्लू उसी प्रकार के और पोस्टर बनवाकर देने की गुरुजी से विनंती करता है। गुरुजी पहले तो इरते है लेकिन बाद में और पोस्टर बनवा देते हैं। कल्लू वे सभी पोस्टर कारखाने की दिवारों पर चिपकता है। सभी को मौन धारण करने के लिए कहता है। पटेल फिर दूसरे दिन आ जाता है। चार रुपये मजदूरी बढाने की माँग करनवाली पोस्टर देखकर फिर घबराता है। धमकियाँ देता है। अंत में और पच्चीस पैसे मजदूरी मजबूर होकर बढ़ा देता है। मजदूरों मे और विश्वास बढ़ जाता है।

नाटक के एक दृश्य में शराब पिते वक्त फॉरेस्ट अफसर पटेल के पास कामतृप्ति के लिए आदिवासी औरत की माँग करता है। चैती पर पटेल की नजर होती है। वह चैती को हवेली में फॉरेस्ट अफसर को भोग लगाने के लिए रखना चाहता है। चैती का पति कल्लू को मुकादम पर पदोन्नति देकर चैती की ड्युटी वह हवेली पर लगाता है। गुरुजी को सब मालूम होने पर कल्लू को इस के पीछे का राज बताता है। उस में आत्मसंम्मान की भावना प्रबल होती है। चैती हवेली नही जाना चाहती। बाकी बचे मजदूर इन दोनों की मदत करने के बजाय उल्टा समझाने लगते है। कल्लू गुरुजी के पास जाकर एक पोस्टर तैयार करवाता है। उसपर नक्सलवादी नेता हा चिन्ह बनाकर लिखा होता है कि चैती हवेली नहीं जाएगी। पटेल गोदाम में आता है और पोस्टर देखकर भड़क उठता है। कल्लू पर कोड़े बरसाता है। तब चैती आगे बढ़कर पटेल के मुँह पर थूँक देती है। तब पटेल आप से बाहर होकर जबरन चैती को उठाकर ले जाना चाहता है। सभी मजदूरों मे विद्रोह का भाव जागृत होता है। सभी पटेल को घेर लेते हैं। पटेल गिड़गिड़ाता है। इसलिए दया आकर मजदूर उसे छोड़ देते हैं। लेकिन पटेल का आदमी पुलिस को बुलाकर लाता है। पुलिस जब आती है तब वह पटेल से हाथ मिलाकर कल्लू और उसके साथियों को झुठे इल्जाम में जेल भिजवाती हैं। चैती को जबरन हवेली पहुँचा दिया जाता है।

कथा खत्म होती है। कौन जीता कौन हारा यह मुख्य सवाल नही हैं। लडते रहना मुख्य बात है। जो काम शुरु किया है उसे बंद नहीं करना चाहिए। दुश्मन को अधमरा छोडने का फल कल्लू को भुगतना पड़ा। अगर विरोध नहीं कर सकते हो तो अत्याचार सहने की तैयारी करो। यही संदेश इस नाटक के माध्यम से डॉ. शेष देना चाहते है।

निष्कर्ष -

डॉ. शेष जी की प्रमुख विशेषता यह रही की उन्होंने अपने नाटक के कथ्य के रुप में वर्तमान समाज में व्याप्त समस्याओं से घिरे हुए अनेक विषयों को चुना है। आंतरिक और बाह्य संघर्ष उनके नाटकों का केंद्र बिंदू रहा। सभी नाटक मंचन के योग्य रहें। उनका सफलता पूर्वक मंचन हुआ है। नौटंकी, कीर्तन आदि अनेक शैलियों का सफलता से निर्वाह किया है।

उनकी प्राथमिक आरंभिक कालों की रचनाएँ 'मुर्तिकार', 'नयी सम्यता के नये नमूने', 'रत्नगर्भा', 'बेटोंवाला बाप', 'तिल का ताड' इनमें उन्होंने पारंपारिक नाट्य लेखन शैली का सफलता से निर्वाह किया है। 'बिन बाती के दिप', 'बाढ का पानी', 'बंधन अपने अपने' , 'खजूराहो का शिल्पी', 'फंदी', 'एक और द्रोणाचार्य' , 'कालजयी' यह अभ्यास कालीन रचनाएँ सशक्त हैं। उपलब्धी कालीन रचनाओं में आभ्यास कालीन रचनाओं से जादा निखार आया। इस काल से आठ नाटक लिखे 'घरौंदा' , 'अरे मायावी सरोवर', 'रक्तबीज', 'पोस्टर', 'राक्षस', 'चेहरे', 'कोमल गांधार', 'आधी रात के बाद' यह सारे नाटक कलात्मक होने के साथ नाटकीय प्रयोगों की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं।

नाटककार ने अपने नाटकों में एक मुख्य समस्या को केंद्रबिंदू में रखकर उस से संलग्न बाकी सभी समस्याओं को रखकर नाटकों की निर्मिती की है। उनके नाटकों में तीन प्रवृत्तियाँ प्रमुखता से दिखाई देती है। १) मोह के क्षण के कारण चारित्र्यहीन बनना २) अतिरिक्त महत्वकांक्षा के कारण होने वाला पतन ३) इस्तेमाल तंत्र के द्वारा किया जानेवाला शोषण।

इन प्रवृत्तियों से संलग्न अनेक समस्याओं को उन्होंने उठाया है। 'मूर्तिकार' में गरीबी की समस्या, 'नयी सभ्यता के नये नमूने' में चारित्र्य के पतन की समस्या, 'रत्नगर्भा' में पारिवारिक समस्या, 'तिल का ताड' और 'घरौंदा' में विवाह और मकान की समस्या, 'बिना बाती के दीप' में इस्तेमाल तंत्र की समस्या, 'बाढ का पानी' में जातियता की समस्या, 'बंधन अपने अपने' में प्रेम समस्या और 'खजूराहो का शिल्पी' में मोह का क्षण की समस्या, 'फंदी' मे भ्रष्टाचार की समस्या, 'एक और द्रोणाचार्य' में शिक्षा-व्यवस्था समस्या, 'कालजयी' में राजनीतिक समस्या, 'राक्षस' में विज्ञान के विनाशक स्वरुप की समस्या, 'कोमल गांधार' में नारी समस्या, 'चेहरे' में दोहरी व्यक्तित्व की समस्या, 'आधी रात के बाद' में भ्रष्टाचार की समस्या और 'पोस्टर' में आदिवासियों का होनेवाला शोषण की समस्या चित्रित हुई है।

डॉ. शंकर शेष जी पर आरोप लगाया जाता है कि 'वे सिर्फ़ मध्यमवर्गीय चित्रण करनेवाले

लेखक थे। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। उन्होंने 'पोस्टर' और 'राक्षस' में ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है। 'कालजयी', 'एक और द्रोणाचार्य', 'खजुराहो का शिल्पी', 'कोमल गांधार', और 'अरे! मायावी सरोवर', में प्राचिन कथाओं को स्वीकार लिया है। इसी प्रकार आदिवासी से लेकर महानगरोंतक सभी वर्गों का चित्रण करने में वे सफल रहें।

संदर्भ सूची -

1.	डॉ. मधुकर हसमनीस	प्रयोगशील नाटककार शंकर शेष	पृ. 11
2.	डॉ. सुनिलकुमार लवटे	नाटककार शंकर शेष	पृ. 39
3.	डॉ. मधुकर हसमनीस	प्रयोगशील नाटककार शंकर शेष	पृ. 45
4.	डॉ. सुनिलकुमार लवटे	नाटककार शंकर शेष	पृ. 70
5.	डॉ. प्रकाश जाधव	डॉ.शंकर शेष का नाटक साहित्य	पृ. 62
6.	डॉ. सुरेश एवं विणा गौतम	राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष	पृ. 36